जुमे का खुत्बा

तारीख़: 8 रबीउल अव्वल 1448 हिजरी, बमुताविक 21 अगस्त 2026 ईस्वी

مِنَ الْآدَابِ الشَّرْعِيَّةِ

कुछ इस्लामी आदाब

الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، وَأَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقًا، وَأَدَّبَ عِبَادَهُ فَأَحْسَنَ تَأْدِيبَهُمْ، وَجَعَلَ هَذَا الدِّينَ شَرِيعَةً كَامِلَةً، لَا تَدَعُ شَأْنًا مِنْ شُؤُونِ الحَيَاةِ إِلَّا ضَبَطَتْهُ، وَلَا خُلُقًا أَوْ طَبْعًا إِلَّا هَذَّبَتْهُ، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، المَبْعُوثُ بِمَكَارِمِ الأَخْلَاقِ، وَالمُرَبِّي عَلَى دَقَائِقِ الآدَابِ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا.أَمَّا بَعْدُ:

अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो, और जान लो कि क़ौमें अपने मालों की अधिकता से नहीं जानी जातीं, और न ही अपनी बुलंद और आसमान को छूने वाली इमारतों की वजह से पहचानी जाती हैं, बल्कि वे अपने अख़्लाक और आदाब की वजह से पहचानी जाती हैं।

إِنَّمَا الأُمَمُ الأَخْلَاقُ مَا بَقِيَتْ فَإِنْ هُمُ ذَهَبَتْ أَخْلَاقُهُمْ ذَهَبُوا

"क़ौमें अख़लाक ही के दम पर बाक़ी रहती हैं, जब उनके अख़लाक़ ख़त्म हो जाते हैं तो वे खुद भी मिट जाती हैं।"

इसलिए इंसान का व्यवहार उसके दिल का आईना होता है, और उसकी पसंद-नापसंद इस बात को दर्शाती है कि उसके मन के भीतर क्या छिपा है।

{وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ} [البقرة: 281].

"और उस दिन से डरो जिसमें तुम सब अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे, फिर हर आदमी को उसकी कमाई का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।" (सूरह अल-बक़रा: 281)

ऐ मुसलमानो! इस दीन की सबसे हैरान कर देने वाली खूबी यह है कि इसने सिर्फ बड़े-बड़े मामलों को सुधारने पर ही संतोष नहीं किया, बल्कि यह हमारी रोज़मर्रा की छोटी-

छोटी आदतों और बारीक व्यवहारों तक में उतरा है। इसने इन्हें इतनी खूबसूरती से सँवारा है कि एक मुसलमान की पूरी ज़िंदगी सिर से पाँव तक अदब और सलीका बन गई है, चाहे उसकी इबादत हो, आपसी मामले हों, बातचीत का ढंग हो, खाना-पीना हो, सोना हो, यहाँ तक कि शौचालय जाने के तरीके और आदाब ही क्यों न हों।

हज़रत सलमान रज़ियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि एक आदमी ने मुझसे कहा: "मैं देखता हूँ कि तुम्हारे साहिब (यानी नबी करीम ﷺ) तुम्हें हर बात सिखाते हैं, यहाँ तक कि वह तुम्हें यह भी सिखाते हैं कि जब तुम में से कोई शौच के लिए जाए (तो क्या करे)!" मैंने कहा:

نَعَمْ، أَجَلْ، وَلَوْ سَخِرْتَ، إِنَّهُ لَيُعَلِّمُنَا كَيْفَ يَأْتِي أَحَدُنَا الغَائِطَ، وَإِنَّهُ: «يَنْهَانَا أَنْ يَسْتَقْبِلَ أَحَدُنَا القِبْلَةَ وَأَنْ يَسْتَدْبِرَهَا، وَأَنْ يَسْتَنْجِيَ أَحَدُنَا بِيَمِينِهِ، وَأَنْ يَتَمَسَّحَ أَحَدُنَا بِرَجِيعٍ وَلَا عَظْمٍ، وَأَنْ يَسْتَنْجِيَ بِأَقَلَّ مِنْ ثَلَاثَةِ أَحْجَارٍ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ وَأَحْمَدُ وَاللَّفْظُ لَهُ].

"हाँ, बिल्कुल, चाहे तुम मज़ाक उड़ाओ! बेशक वह हमें सिखाते हैं कि हम में से कोई कैसे शौचालय जाए, और वह हमें मना फ़रमाते हैं कि हम में से कोई किबला की तरफ मुँह करे या उसकी तरफ पीठ करे, और इस बात से भी मना फ़रमाते हैं कि कोई आदमी अपने दाहिने हाथ से इस्तिन्जा (सफाई) करे, और इस बात से भी कि कोई गोबर या हड्डी से इस्तिन्जा करे, और इस बात से भी कि तीन पत्थरों से कम पर इस्तिन्जा किया जाए।" (इस हदीस को इमाम मुस्लिम और इमाम अहमद ने रिवायत किया है, अलबत्ता हदीस के अल्फाज़ मुसनद अहमद के हैं)।

यह वह दीन है जो आपको बैठने का सलीका सिखाता है, बात करने का ढंग सिखाता है, बल्कि आपको यह भी सिखाता है कि कैसे छींकना चाहिए और कैसे जम्हाई लेनी चाहिए, और यह भी कि बेहद मामूली हालात में भी दूसरों को तकलीफ पहुँचाने से कैसे बचना चाहिए! इस व्यापकता और पूर्णता के बाद और कौन सी पूर्णता होगी? और इस तरबियत से ज़्यादा असरदार और गहरी तरबियत कौन सी हो सकती है?

ऐ अल्लाह के बन्दो! इस्लाम में अदब कोई बनावटी या दिखावे की चीज़ नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी छुपी हुई इबादत है जिससे इंसानों के अख़लाक और क्षमता का अंदाज़ा होता है। जो शख़्स इन छोटी-छोटी बातों का खयाल रखता है, वह इस बात का सबूत है कि उसका दिल ज़िंदा है, उसका मन हल्का-फुल्का और उसकी तबीयत पाकीज़ा है। और जो इंसान इनकी परवाह नहीं करता, वह अपने दिल की लापरवाही और अपनी फितरत के रूखेपन को ज़ाहिर कर देता है। यही वजह है कि शरीयत रोज़मर्रा की आदतों को सँवारने और हमारे रोज़मर्रा के व्यवहार को बेहतर बनाने के लिए आई है।

इन आदाब में से एक अहम अदब 'छींक का अदब' है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

«إِنَّ اللهَ يُحِبُّ العُطَاسَ، وَيَكْرَهُ التَّثَاؤُبَ، فَإِذَا عَطَسَ فَحَمِدَ اللهَ، فَحَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ سَمِعَهُ أَنْ يُشَمِّتَهُ»

[رَوَاهُ البُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ].

"बेशक अल्लाह तआला छींक को पसंद फ़रमाता है और जम्हाई को नापसंद करता है, इस लिए जब कोई छींके और अल्हम्दुलिल्लाह कहे, तो हर उस मुसलमान का जो उसे सुने, यह हक़ है कि वह उसे जवाब में यरहमुकल्लाह कहे।" (इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

ज़रा गौर कीजिए कि इस्लाम ने छींक को कैसा ज़िक्र बना दिया है, और इस पर लोगों के बाहमी ताल्लुक और रहमत को स्थापित किया है! छींकने वाला कहता है: अल्हम्दुलिल्लाह "तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं।" और उसका भाई उसे जवाब में कहता है: यरहमुकल्लाह "अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए।" जिसके जवाब में वह कहता है: यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिह बालकुम "अल्लाह आपको हिदायत दे और आपके मामलात को दुरुस्त कर दे।"

ये कुछ आसान से शब्द हैं, लेकिन ये आपस में मोहब्बत की बुनियाद मज़बूत करते हैं और दिलों के प्रेम को बढ़ाते हैं।

इन्हीं आदाब में से एक यह भी है कि इंसान दूसरों को अपनी तकलीफ से बचाए; इसलिए छींकते वक्त वह अपनी आवाज़ धीमी रखे और अपने मुँह को ढाँप ले। क्योंकि

«كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا عَطَسَ غَطَّى وَجْهَهُ بِيَدِهِ أَوْ بِثَوْبِهِ، وَغَضَّ بِهَا صَوْتَهُ» [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ مِنْ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ].

"नबी करीम ﷺ जब छींकते तो अपने हाथ या कपड़े से अपना चेहरा ढाँप लेते और उसके साथ अपनी आवाज़ भी धीमी कर लेते थे।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है और इसे सही करार दिया है)।

ऐ ईमान वाले भाइयो! इन्ही आदाब में से एक अदब "जम्हाई का अदब" भी है। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

«التَّثَاؤُبُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا قَالَ: هَا، ضَحِكَ الشَّيْطَانُ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ].

"जम्हाई शैतान की तरफ से होती है, जब तुम में से किसी को जम्हाई आए तो वह जहाँ तक हो सके उसे दबाए, क्योंकि जब तुम में से कोई मुँह खोलकर 'हा' की आवाज़ निकालता है तो शैतान हँसता है।" (इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)।

जम्हाई को शैतान की तरफ इसलिए मंसूब किया गया है क्योंकि यह सुस्ती, भारीपन और काहिली का संकेत है, इसके विपरीत छींक जिसे अल्लाह तआला पसंद करता है, वह आमतौर पर चुस्ती, फुर्ती और ऊर्जा की अलामत होती है। लिहाज़ा मुसलमान के लिए मुस्तहब है कि वह जम्हाई के अस्बाब को दूर करे और उसके साथ ऐसे तरीके से पेश आए जो उसकी गरिमा को बरकरार रखे और उसकी शक्ल को खराब न होने दे।

इस्लामी आदाब में से एक बारीक अदब "डकार का अदब" भी है। डकार दरअस्ल हवा की वह आवाज़ है जो पेट से मुँह के रास्ते बाहर निकलती है, और ज़्यादातर पेट भर जाने पर पैदा होती है। जब कोई शख़्स जान-बूझकर इस नापसंदिदा आवाज़ को

निकालता है और अपने आसपास बैठे लोगों की ज़रा भी परवाह नहीं करता, तो इससे दूसरों को वाकई बड़ी तकलीफ होती है। हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि:

تَجَشَّأَ رَجُلٌ عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: «كُفَّ عَنَّا جُشَاءَكَ» [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَحَسَّنَهُ الأَلْبَانِيُّ]

एक शख़्स ने नबी करीम ﷺ के पास डकार ली, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "हम से अपनी डकार को रोको।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी इसे हसन करार दिया है)।

दरअस्ल आप ﷺ ने इसके ज़रिए अख़लाक की दुरुस्ती और आदत की इस्लाह दोनों को इकट्ठा कर दिया। क्योंकि डकार से मना करना इस बात की तरफ इशारा है कि इंसान इसके बुनियादी सबब यानी पेट भर कर खाने से बचे। हज़रत मिक़दाम इब्न मादी-करिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ को फ़रमाते हुए सुना:

«مَا مَلأَ آدَمِيٌّ وِعَاءً شَرًّا مِنْ بَطْنٍ، بِحَسْبِ ابْنِ آدَمَ أُكُلَاتٌ يُقِمْنَ صُلْبَهُ، فَإِنْ كَانَ لَا مَحَالَةَ فَثُلُثٌ لِطَعَامِهِ، وَثُلُثٌ لِشَرَابِهِ، وَثُلُثٌ لِنَفَسِهِ» [رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ وَصَحَّحَهُ].

"आदमी ने कोई ऐसा बर्तन नहीं भरा जो पेट से ज्यादा बुरा हो। आदम के बेटे के लिए कुछ लुक्मे ही काफी हैं जो उसकी कमर को सीधा रख सकें, और अगर ज्यादा खाना ज़रूरी ही हो तो एक तिहाई खाने के लिए, एक तिहाई पीने के लिए और एक तिहाई साँस के लिए होना चाहिए।" (इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है और इसे सही करार दिया है)।

और अरब कहा करते थे:

إِذَا امْتَلَأَتِ المَعِدَةُ خَمَدَتِ الفِكْرَةُ

"जब पेट भर जाता है तो विचार शक्ति सुस्त पड़ जाती है।"

أَقُولُ قَوْلِي هَذَا وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ لِي وَلَكُمْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ، فَاسْتَغْفِرُوهُ وَتُوبُوا إِلَيْهِ؛ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

दूसरा खुत्बा

الحَمْدُ لِلَّهِ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

ऐ अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से ऐसे डरो जैसे उससे डरने का हक़ है, और ज़ाहिर व बातिन में इस बात का ध्यान रखो कि वह तुम्हें देख रहा है, और जान लो कि तुम सब उसी की तरफ जमा किए जाओगे।

ऐ बरकत वाले लोगो! जब इस्लाम ने आम हालात में भी इन रवैयों और आदाब की तरबियत दी है, तो अल्लाह के घरों यानी मस्जिदों में इनका खयाल रखना और भी ज़्यादा ज़रूरी और अहम है; क्योंकि मस्जिदों की अपनी एक पवित्रता और सम्मान है, और उनके आदर और सम्मान का एक ख़ास हक़ है। अल्लाह तआला ने कहा:

فِي بُيُوتٍ أَذِنَ اللهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ (36) رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ} (النور: ٣٦ – ٣٧)

"उन घरों में जिनके बुलंद करने और जिनमें अपने नाम की याद का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है, वहाँ सुबह व शाम अल्लाह तआला की तसबीह करो। ऐसे लोग जिन्हें तिजारत और खरीद-फरोख्त अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ कायम करने और ज़कात अदा करने से गाफिल नहीं करती, उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें उलट-पलट हो जाएंगी।" (सूरह अन्-नूर: 36-37)

हम मस्जिदों में अक्सर ऐसी अप्रिय चीज़ें देखते हैं जिन पर किसी का ध्यान ही नहीं जाता! मिसाल के तौर पर छींकना, जम्हाई लेना और डकारना, बगैर किसी परदे के और बगैर आवाज़ धीमी किए। हालाँकि मस्जिदें तो वे पवित्र सथान हैं जहाँ जिस्म को सुकून और दिलों को खूशू व खुज़ू से सरशार होना चाहिए। क्या अक़्ल यह स्वीकार करती है कि आम लोगों की बैठकों में तो आदाब का पूरा ख्याल रखा जाए, और रब के घर में उससे लापरवाही बरती जाए?!

प्यारे भाइयो! मस्जिद के एहतराम की मांग यह है कि इसे हर उस चीज़ से बचाया जाए जो नागवारी का सबाबे बने, और इबादत के सुकून व पवित्रता को प्रभावित करने वाली हर बात से इसे महफ़ूज़ रखा जाए। जब शरीयत ने मस्जिद के अंदर तिलावत-ए-कुरआन के वक्त भी आवाज़ बुलंद करने से मना किया है, तो फिर इन नापसंदिदा हरकतों के ज़रिए शोर मचाने का क्या मामला होगा! हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«أَلَا إِنَّ كُلَّكُمْ مُنَاجٍ رَبَّهُ، فَلَا يُؤْذِيَنَّ بَعْضُكُمْ بَعْضًا، وَلَا يَرْفَعْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الْقِرَاءَةِ» [رَوَاهُ أَبُو دَاوُدَ وَصَحَّحَهُ الأَلْبَانِيُّ]

"खबरदार! तुम में से हर कोई अपने रब से सरगोशी कर रहा होता है, इसलिए कोई किसी को तकलीफ न पहुँचाए, और न ही कुरआन पढ़ने में एक-दूसरे पर आवाज़ ऊँची करे।" (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने इसे सही करार दिया है)

हज़रत साइब बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा: "(एक दिन) मैं मस्जिद में खड़ा था कि किसी व्यक्ति ने मुझे कंकरी मारी। मैंने देखा तो वे उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु थे! उन्होंने फरमाया: जाओ और उन दोनों को मेरे पास लेकर आओ। मैं उन दोनों को लेकर उनके पास हाज़िर हुआ। हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा: तुम दोनों कौन हो? या कहाँ के रहने वाले हो? उन्होंने कहा: हम ताइफ के रहने वाले हैं। तो उन्होंने फरमाया:

لَوْ كُنْتُمَا مِنْ أَهْلِ الْبَلَدِ لَأَوْجَعْتُكُمَا، تَرْفَعَانِ أَصْوَاتَكُمَا فِي مَسْجِدِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ !) [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ].

"अगर तुम दोनों इसी शहर (मदीना) के रहने वाले होते, तो मैं तुम्हें ज़रूर सज़ा देता कि तुम अल्लाह के रसूल ﷺ की मस्जिद में अपनी आवाज़ें ऊँची कर रहे हो!" (इस हदीस को इमाम बुखारी ने रिवायत किया है)

ऐ अल्लाह के बन्दो! इस तरह की चीज़ों में भी अदब का लिहाज रखना अच्छे अख़लाक और ज़िंदा ज़मीर की निशानी है। सच्चा मोमिन सिर्फ अपने बारे में नहीं

सोचता, बल्कि वह अपने आस-पास के लोगों का भी खयाल रखता है और हर उस चीज़ से परहेज़ करता है जो उन्हें तकलीफ दे, चाहे वह कितनी ही मामूली बात क्यों न हो। अतः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया:

«الْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُونَ مِنْ لِسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ وَمُسْلِمٌ].

"सच्चा मुसलमान वो है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज रहें, और मुहाजिर वो है जो उन चीज़ों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना किया है।" (इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

और जिस तरह ज़बान या हाथ से किसी को तकलीफ देना मना है, उसी तरह हर उस हरकत से कष्ट पहुंचाना भी मना है जो नफरत और नागवारी का सबब बने। इस लिए हर मुसलमान की यह ज़िम्मेदारी है कि वह खुद को सुधारे, दूसरों को अच्छे अख़लाक़ और ढंग की दावत दे, और अपने आपको इन खूबसूरत आदाब का पाबंद बनाए।

اللَّهُمَّ أَعِزَّ الإِسْلَامَ وَالْمُسْلِمِينَ، وَأَذِلَّ الشِّرْكَ وَالْمُشْرِكِينَ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ، وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ، الأَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالأَمْوَاتِ، وَوَفِّقِ - اللَّهُمَّ - أَمِيرَنَا وَوَلِيَّ عَهْدِهِ لِهُدَاكَ، وَاجْعَلْ أَعْمَالَهُمَا فِي طَاعَتِكَ وَرِضَاكَ، وَاجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِناً مُطْمَئِنًّا سَخَاءً رَخَاءً، دَارَ أَمْنٍ وَإِيمَانٍ، وَسَائِرَ بِلَادِ الْمُسْلِمِينَ.

"ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को इज़्ज़त दे, और शिर्क और मुशरिकों को ज़लील कर। ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों, और मोमिन मर्दों और औरतों, जो ज़िंदा हैं और जो वफात पा चुके हैं, सबकी मगफिरत फरमा। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके उत्तराधिकारी (वली-ए-अहद) को अपनी राह पर चलने की तौफीक दे, और उनके सारे कामों को अपनी मर्ज़ी और राज़ी-खुशी के मुताबिक बना दे। और इस देश को तथा मुसलमानों के बाकी सभी देशों को अमन-चैन, खुशहाली, सुरक्षा और ईमान का ठिकाना बना दे।"

जुमा के खुत्बात तैयार करने वाली कमेटि